भाषाविज्ञान : 2

हिंदी भाषा - उद्भव एवं विकास

आन लाइन अध्यापन / भ्रम निवारण समय

प्रातः 8-00 बजे से 9-30 भाषाशास्त्र एवं

सायं 5-30 बजे से 7-00 हिंदी साहित्य का इतिहास

ZOOM ID - 261-891-6758 / मोबाईल नं. 9473030984

संशोधन अपेक्षित है

इंटर से स्नातकोत्तर एवं हिंदी भाषा एवं साहित्य के - यूजीसी एवं सिविल सर्विसेज के अखिल भारतीय परीक्षार्थी / प्रतियोगी (सबके लिए उपलब्ध)

डा.शिवचन्द्र सिंह

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिंदी

रामेश्वरदास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

आर्यभाषा

देववाणी संस्कृत 1500 ईपू

वैदिक संस्कृत 1500- 1000 ईपू लौकिक संस्कृत 1000- 600 ईपू

लौकिक संस्कृत एवं जनभाषा के घालमेल से प्राकृत
पालि ग्रन्थ एवं बौद्ध मतानुसार "सा मागधी मूलभाषा"

प्राकृत तीन उत्थानों में विकसित हुई

600 ईपू से 1000 ईस्वीं के बीच
प्राकृत-प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय

प्राकृत प्रथम	500 ईपू से ईस्वीं सन् की प्रथम शती
प्राकृत द्वितीय	ईस्वीं सन् की प्रथम शती से 500 ईस्वीं
प्राकृत तृतीय	500 ईस्वीं से 1000 ईस्वीं

प्राकृत-1

500 ईपू ईस्वीं सन् की प्रथम शती

1. पालि

बौद्ध एवं जैनियों के प्राचीन ग्रन्थों के लेखन में प्रयुक्त

2. अशोक का अभिलेखीय प्राकृत

अशोक ने अपने धम्म प्रचार के लिए अपने शिलालेखों एवं स्तम्भ लेखों में तत्-स्थानीय जनभाषा एवं प्राकृत के मिश्रित रूप

प्राकृत - ।।

ईस्वीं सन् की प्रथम शती - 500 ईस्वीं

सामान्यतः इसे ही प्राकृत माना जाता है
जिसे 'साहित्यिक प्राकृत' भी कहते हैं

'साहित्यिक प्राकृत' से क्षेत्र विशेष के अनुसार
पांच प्राकृतों का उद्भव हुआ

1.महाराष्ट्री 2.मागधी 3.अर्द्धमागधी 4.शौरसेनी 5.पैशाची

तृतीय प्राकृत – अपभ्रन्श

500 ईस्वीं-1000 ईस्वीं

कतिपय भाषाविद् के अनुसार तीन अपभ्रन्शों का उद्भव हुआ

नागर अपभ्रन्श उपनागर अपभ्रन्श ब्राचड़ अपभ्रन्श

अधिकांश भाषाविद् के अनुसार छः अपभ्रन्शों का उद्भव हुआ

महाराष्ट्री अपभ्रन्श मागधी अपभ्रन्श अर्द्धमागधी अपभ्रन्श शौरसेनी अपभ्रन्श खस अपभ्रन्श ब्राचड़ अपभ्रन्श

1000 ईस्वीं के आसपास “परवर्ती अपभरंश” जिसे “अवहट्ठ” भी कहते हैं, से आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का उद्भव हुआ

"**परवर्ती अपभ्रन्श**" "**अवहट्ठ**" से जिसे चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने "**पुरानी हिंदी**" नाम दिया है

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का उद्भव हुआ

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा

1000 – 2020

महाराष्ट्री अपभ्रन्श	मराठी
मागधी अपभ्रन्श	
पूर्वी मागधी अपभ्रन्श	बंगला असमी उडिया
पश्चिमी मागधी अपभ्रन्श	बिहारी हिन्दी
अर्द्ध मागधी अपभ्रन्श	पूर्वी हिन्दी
शौरसेनी अपभ्रन्श	
पश्चिमी शौरसेनी अपभ्रन्श	राजस्थानी हिन्दी
माध्यमिक शौरसेनी अपभ्रन्श	पश्चिमी हिन्दी
उतरी शौरसेनी अपभ्रन्श(पैशाची एवं खस पर प्रभाव)	
खस अपभ्रन्श (शौरसेनी नागर अपभ्रन्श प्रभावित)	पहाड़ी हिन्दी
ब्राचड़ अपभ्रन्श	सिंधी
पैशाची अपभ्रन्श (शौरसेनी अपभ्रन्श प्रभावित)	लहंदा एवं पंजाबी

बिहारी हिन्दी

पश्चिमी मागधी अपभ्रन्श

स्मरण सूत्र- बिमा मैमभो अंब बि.बिहारी, मागधी अपभ्रंश, मै-मैथिली, म.मगही, भो.भोजपुरी, अं.अंगिका, ब-बज्जिका

मैथिली- दरभंगा, चम्पारण, उत्तरी मुंगेर, सहरसा, भागलपुर, मधेपुरा, सुपौल, समस्तीपुर, उत्तरी मुंगेर, पूर्णिया, नेपाल राज्य के रौतहत, सरलाही, सप्तरी, मोहतरी और मोरंग जिले **स्मरणीय रचनाकार**-विद्यापति, हरिमोहन ठाकुर, नागार्जुन, अशोक दत्त, अग्निपुष्प, आनन्द झा,कुलानन्द मिश्र, कुसुम ठाकुर, कृष्णमोहन झा,उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

मगही- मगही का मुख्य केन्द्र गया है, नवादा,नालंदा, जहानाबाद, औरंगाबाद, अरवल, मोकामा, बड़हिया, बाढ़, गिद्धौर, फतुहा, लक्खीसराय, पश्चिमी बंगाल के पुरूलिया, पश्चिमी माल्दा, बांकुड़ा और उड़ीसा के मयूरभंज वारिपदा जिला एवं वामरा, राँची के पाँच परगना-सिल्ली, बरन्दा, रहे, बुन्दू तथा तमर में 'पंचपरगनिया **स्मरणीय रचनाकार**- आदि कवि सरहपाद, नारायण झा, उदयशंकर शर्मा, रामप्रसाद सिंह, भरत सिंह, उमाशंकर सिंह सुमन, दिलीप कुमार, संपति अर्याणि,रामनरेश वर्मा, कृष्णदेव प्रसाद

भोजपुरी- भोजपुर, बक्सर, रोहतास एवं कैमूर, छपरा, सिवान, सारण और गोपालगंज में मोतीहारी, डाल्टेनगंज, बलिया, पूर्वी देवरिया तथा पूर्वी गाजीपुर ,गोरखपुर, पड़रौना, बस्ती पूर्वी जौनपुर, बनारस, नेपाल की तराई से लेकर उत्तरप्रदेश के बहराईच, चंपारण जिले एवं न्यू जलपाई गुड्डी से लेकर कुमायँ के थारू लोग **स्मरणीय रचनाकार**- भोजपुरी के आदि कवि कबीर के जन्म दिन को भोजपुरी दिवस एवं विश्व भोजपुरी दिवस भिखारी ठाकुर, हीरा डोम, राहुल सांकृत्यायन, चाई ओझा, शारदा सिन्हा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्र.मंत्री चंद्रशेखर,मनोरंजन प्रसाद सिंह,रघुवीर नारायण,रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', कलक्टर सिंह 'केसरी'

अंगिका - अंग जनपद -भागलपुर प्रमंडल के अंतर्गत और संथालपरगना। भागलपुर, मुंगेर, पूर्णिया, कटिहार, बेगूसराय, सहरसा, देवघर, जमुई, जामतारा, दुमका, गोड्डा, बांका, शेखपुरा, साहेबगंज, पाकुड़ संथालपरगना तथा पश्चिमी बंगाल के मालदह **स्मरणीय रचनाकार**- तेजनारायण कुशवाहा, प्रेम प्रभाकर, बबुआजी झा 'अज्ञात',भुवनेश्वर सिंह 'भुवन',यदुनन्दन शर्मा 'प्रलयंकर', श्यामल सुमन, प्रभानंदा

बज्जिका-वर्तमान वैशाली जिला एवं मुजफ्फरपुर में तथा मैथिली प्रभावित सीतामढ़ी का दक्षिणी भाग, शिवहर जिला, साहेबगंज, दलसिंह सराय, समस्तीपुर, मगही प्रभावित बज्जिका- सोनपुर, पटना, महनार, मोहिउद्दीननगर और राघोपुर में, भोजपुरी प्रभावित बज्जिका- पश्चिमी छपरा, दक्षिणी मोतिहारी में **स्मरणीय रचनाकार**- अवधेश्वर अरुण,रमण कुमार, सियाराम तिवारी, सियाराम शर्मा, रणविजय कुमार राजन,ब्रजनंदन वर्मा, अमरनाथ मेहरोत्रा

पूर्वी हिन्दी

अर्द्ध मागधी अपभ्रन्श

पूअमा अवछ-पू-पूर्वी, अ-अर्द्ध, मा-मागधी, अबछ अवधी, बघेली, छतीसगढ़ी

अवधी-पूर्वी का क्षेत्र प्राचीन कोशल जनपद है जो वर्तमान में उतरप्रदेश के लखनउ, इलाहाबाद, फैजाबाद, उन्नाव, रायबरेली, गोंडा, बस्ती, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़

रामकाव्य एवं सूफी काव्य की एकमात्र भाषा थी, मंझन, कुतुबन, जायसी, तुलसी, बाबा रामदास

बघेली- मध्यप्रदेश के बघेलखंड-रीवा, शहडोल, मैहर, सतना में

लोकगाथा आल्हा रूदल के गायन के लिए विख्यात- बारेलाल जैन, रविशंकर दुबे, तृप्ति शाक्या

छतीसगढ़ी - छतीसगढ़, रायपुर, बिलासगढ़, दुर्ग, नंदगाँव में

राजस्थानी हिन्दी

पश्चिमी शौरसेनी अपभ्रन्श

सूत्र शैली में-**रापशौमामामेज**, रा-राजस्थानी, प-पाश्चिमी, शौ-शौरसेनी, मा-मारवाड़ी, मा-मालवी, मे-मेवाती, ज-जयपुरी

मारवाड़ी- पश्चिमी राजस्थान, जोध्पुर, उदयपुर, जैसलमेर, बीकानेर में

मालवी- मध्यप्रदेश एवं सीमावर्ती मालवा प्रदेश में

मेवाती- उत्तरी राजस्थान के अलवर तथा हरियाणा के गुडगाँव में

जयपुरी या ढूँढ़ाड़ी- राजस्थान के पूर्वी भाग, जयपुर, कोटा एवं बूंदी में

रासो ग्रन्थ में, संतों-भक्तों ने अपने वचनों में राजस्थानी भाषाओं का खुलकर प्रयोग किया।
राजस्थान का अधिकतर रासो ग्रन्थ मारवाड़ी में एवं अत्यल्प जयपुरी में
चंदबरदाई, रोडा, नरपति नाल्ह, मीरा, दादू एवं हरिदास

पश्चिमी हिन्दी

माध्यमिक शौरसेनी अपभ्रन्श

स्मरणार्थ सूत्र है-पमाशौकहखबुदनिब्रता- प-पश्चिमी, मा-माध्यमिक, शौ-शौरसेनी, क-कन्नौजी, ह-हरियाणवी ख-खड़ी, बु. बुंदेली, द-दक्खिनी नि.निमाड़ी, ब्र.ब्रज, ता-ताज्जुबेकी. रूस के ताजुबेक में

ब्रजभाषा- ब्रज प्रदेश-मथुरा, आगरा, अलीगढ़, ग्वालियर, भरतपुर के अतिरिक्त बरेली, एटा, बदायूँ, मैनपुरी, गुडगाँव, करौलीद्ध में प्रचलित भाषा ब्रजभाषा है। इसके अन्य नाम ब्रजी, ब्रिज, ब्रिजकी, मथुरही, माथुरी, भाषामणि, पुरूषोत्तम भाषा, भाखा या नागभाषा, अष्टछाप के कवि, रीतिकालीन कवि, भारतेन्दु, भारतेन्दु-मंडली, आधुनिक युग में हरिऔंध, रत्नाकर आदि।

खड़ी- मूलतः दिल्ली के आसपास की भाषा बदले रूप में पूर्ण भारत राष्ट्रभाषा राजभाषा एवं संपर्क भाषा है प्रथम प्रयोक्ता, सरहपाद, अमीर खुसरो, इंशा अल्ला खान्, पुष्प, लल्लू लाल, सदासुख,, शिवप्रसाद सिंह, भारतेन्दु, द्विवेदी युगीन कवि एवं आधुनिक रचनाकार- निराला, प्रसाद, प्रेमचंद, अज्ञेय, मुक्तिबोध, हजारी प्रसाद, मैथिलीशरण, दिनकर आदि

दक्खिनी दक्खिनी-मूलतः खड़ी बोली कौरवी का ही एक रूप है लिपि ही केवल फारसी है-रूप सामान्यतः हिन्दी की तरह ही है, भाषा-साहित्य की आत्मा पूर्णतः भारतीय है। दक्खिनी को उर्दू की जननी है, दक्कन में प्रचलित होने के कारण दक्कनी एवं दक्खिनी है। बीजापुर,गोलकुंडा, अहमदनगर,बंबई,बरार विकास में मुहम्मद बिन तुगलक का योगदान है। मसउद, इब्रसाद, फरीदुद्दीन गेजे शंकर, अमीर खुसरो, ख्वाजा बंदा नवाज, निजामी, गुलाम अली बेलूरी एवं अब्दुल बली

हरियाणवी **हरियाणवी या बांगरू** - हरियाणा प्रदेश के बांगर में प्रचलित होने के कारण हरियाणी, हरयाणवी एवं बांगरू। परिनिष्ठत हरियाणवी क्षेत्र हरियाणा, पंजाब का कुछ भाग तथा ग्रामीण दिल्ली, रनाल,रोहतक, हिसार,पटियाला,दिल्ली ।

बुंदेली- झाँसी, जलौन,भोपाल,सागर,हमीरपुर,ग्वालियर, मेरठ, दिल्ली, बिजनौर, रामपुर, मुरादाबाद, गाजियाबाद

कन्नौजी- इटावा,कानपुर, हरदोई

निमाड़ी- मध्यप्रदेश के निमाड़ जिले में

पहाड़ी हिन्दी

खस अपभ्रन्श (शौरसेनी नागर अपभ्रन्श प्रभावित)

पशौखगकुने- प पहाड़ी, शौ-शोरसेनी, ख-खस, ग-गढवाली, कु-कुमायूनी, ने-नेपालवी

गढ़वाली- टेहरी, सहारनपुर, अल्मोड़ा, देहरादून, बिजनौर,मुरादाबाद, केदारनाथ
स्मरणीय रचनाकार- लोक साहित्य पर्याप्त है, बोली में साहित्य नहीं ही हैं।

कुमायूँनी- कुमायूं, अल्मोड़ा, चमोली, नैनीताल, पिथौरागढ़,
स्मरणीय रचनाकार.गुमानी पंत, कृष्णदत्त पांडे, सिवदत्त सती, सुमित्रानंदन पंत

नेपालवी - नेपाल की तराई में